



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 128]

नई दिल्ली, बृद्धपाल, मार्च 31, 1982/चैत्रा 10, 1904

No. 128] NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 31, 1982/CHAITRA 10, 1904

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या ही जाती है जिससे कि यह वलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

विधि, स्वाय और कम्पनी कार्य मंत्रालय

(कम्पनी कार्य विभाग)

(कम्पनी विधि बोर्ड)

आदेश

नई दिल्ली, 31 मार्च, 1982

का० आ० 226 (अ) :—कम्पनी विधि बोर्ड का समाक्षात हो गया है कि स्टेट केमिकल्स ऐण्ड फार्मस्युटिकल्स कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड जो कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन निगमित कंपनी है के मुख्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के प्रयोजन के लिए और उपकरण कार्मिक और सामग्री के दुर्लभ स्रोतों के प्रयोग को प्राप्त करने के प्रयोजन के लिए स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन और सम्बद्ध इकाइयों की नीति के समन्वय द्वारा दक्ष तथा शार्थिक प्रसार और कार्यकरण को सुनिश्चित करने के लिए लोक हित में यह आवश्यक है कि स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड को जो कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन निगमित कम्पनी है और उक्त स्टेट केमिकल्स ऐण्ड फार्मस्युटिकल्स कार्पोरेशन आफ इंडिया जो कि स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन आफ इंडिया के पूर्ण स्वामित्व में समनुचंगी कम्पनी है एक एकल कम्पनी में समामेलित किया जाना चाहिए।

और प्रस्तावित आदेश के प्रारप की एक प्रति उपर्युक्त कम्पनियों अधिनियम स्टेट केमिकल्स ऐण्ड फार्मस्युटिकल्स कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड और

स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड को भेज दी गई है और उनसे प्राप्त सुझावों और आसेपों पर कम्पनी विधि बोर्ड द्वारा सम्बन्धित रूप से विचार कर लिया गया है

प्रतः कम्पनी विधि बोर्ड भारत सरकार के कम्पनी कार्य विभाग की अधिसूचना सं. सा० का० नि० 443 (अ) तारीख 18 अक्टूबर 1972 के साथ पठित कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 396 की उपधारा (1) और (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित आदेश करता है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम :—इस आदेश का संक्षिप्त नाम स्टेट केमिकल्स ऐण्ड फार्मस्युटिकल्स कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड और स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड (समामेलन) आदेश, 1982 है।

2. परिभाषाएँ :—इस आदेश में जब तक कि संदर्भ से आवश्यक अपेक्षित न हो, —

- (क) “नियत विन” से बहु तारीख अभिवृत है जिसको यह आदेश राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है;
- (ख) “विशिष्ट कम्पनी” से स्टेट केमिकल्स ऐण्ड फार्मस्युटिकल्स कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड;
- (ग) “परिणामिक कम्पनी” से स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड अभिवृत है।

3. कम्पनियों का समामेलन :—(1) नियत विन से ही विशिष्ट कम्पनी का उपक्रम उभके विनागमों महिने यदि कोई हो स्टेट ट्रेडिंग

कार्पोरेशन आफ ईडिया लिमिटेड को अन्तरित और उम में निहित हो जाएगा। वह कम्पनी ऐसा अन्तरण होते ही समामेलन के परिणामस्वरूप उनी समझी जाएगी।

(२) नेट्रो प्रयोजनों के लिए समामेलन दोनों कम्पनियों के ३१ मार्च, १९८१ को संपरीक्षित लेखांगों और तुलनपत्रों के संबंध में प्रभावी होगा और उसके पश्चात् के सव्यवहार सम्मिलित खाते में डाल दिए जाएंगे। विधिटिन कम्पनी से किसी पश्चात् तारीख को अपने अन्तिम लेख नैयार करने की अपेक्षा नहीं की जाएगी और पारिणामिक कम्पनी ३१ मार्च, १९९१ को तुलनपत्र के अनुसार सभी प्राप्तियां और दायित्व से नेगी और उसके पश्चात् के सभी सव्यवहारों के लिए पूर्ण रूप से जिम्मेदार होगी।

स्पष्टीकरण.—“विधिटिन कम्पनी के उपक्रम” के अन्तर्गत नियत दिन में टीक पूर्व विधिटिन कम्पनी के सभी अधिकारी एवं नियतया प्राधिकार और विशेषाधिकार तथा सभी सम्पत्ति स्थावर या जंगल जिसमें नकद अविशेष शारकितियां राजस्व प्रतिशेष विनिधान और ऐसी सम्पत्ति जो विधिटिन कम्पनी की हो या उसके कर्जे में हो में या उससे उत्पन्न सभी अन्य हित और अधिकार और उससे मंवंधित पुस्तके लेखा और दस्तावेज तथा विधिटिन कम्पनी के उम सभी विद्यमान किसी भी प्रकार के अपने दायित्व और बाध्यताएँ हैं।

४. सम्पत्ति की कनिष्ठता भवों का अन्तरण :—इस आदेश के प्रयोजन के लिए नियत दिन को विधिटिन कम्पनी के सभी लाभ और हानियां या दोनों यदि कोई हों तथा विधिटिन कम्पनी, जब उसका अन्तरण पारिणामिक कम्पनी का किया जाए, की राजस्व शारकितियां या आटे, या दोनों यदि कोई हों पारिणामिक कम्पनी के साथ लाभ और हानिया तथा व्याप्ति राजस्व शारकितियां या आटो के भाग हो जाएंगे।

५. तकियां आदि की अवास्तु :—इस आदेश के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए, नियत दिन के टीक पूर्व विद्यमान या प्रभावी सभी गांधीदारी, विलेख, बन्धपत्र, कागर और सभी प्रकार की अप्य सिद्धान्तों जिनकी विधिटिन वस्ती एक पक्षकार है, पारिणामिक कम्पनी के विश्व या पक्ष में पूर्ण प्रवृत्त और प्रभावी होगी तथा पूर्णतया और प्रभावी तौर पर इस प्रकार प्रवृत्त की जा सकेंगी, मानों विधिटिन कम्पनी के स्थान पर पारिणामिक कम्पनी उसकी एक पक्षकार थी।

६. विधिक कार्यवाहीयों को व्यावृत्ति—यदि नियत दिन को विधिटिन वस्ती द्वारा या उसके विश्व कोई बाद, अधियोजन, अपील या किसी प्रकार की अन्य विधिक कार्यवाही लम्बित है तो, विधिटिन कम्पनी के उपक्रम के पारिणामिक कम्पनी को अन्तरण या इस आदेश में किसी बात के कारण उसका उपशमन नहीं होगा या उन्हें राका नहीं जाएगा, या उन पर किसी भी प्रकार से प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा, किन्तु यह बाद, अधियोजन, अपील या अन्य विधिक कार्यवाही पारिणामिक कम्पनी द्वारा या उसके विश्व, उसी रीति से और उसी विस्तार तक चालू रखी, अधियोजन और प्रवर्तन की जा सकेंगी, जिस रीति से और जहां तक वह, यदि यह आदेश नहीं किया गया होता, विधिटिन कम्पनी द्वारा या उसके विश्व चालू रखी, अधियोजित और प्रवर्तित की जाती या की जा सकती।

७. व्याधान के बारे में उपबन्ध :—विधिटिन कम्पनी द्वारा नियत दिन के पूर्व किए गए कारबार के लाभों और अभियांत्रों (जिसके प्रान्तर्गत मंचित शानियां और अनामेलित अवक्षयण भी हैं) की बाबत सभी कर पारिणामिक कम्पनी द्वारा उम विस्तार सक संदेश होंगे, जहां तक वे, यदि यह आदेश नहीं किया गया होता, तो, विधिटिन कम्पनी द्वारा नंदेश होते।

८. विश्वान्त कम्पनी के विद्यमान अधिकारीयों और अन्य कर्मचारियों के बारे में उपबन्ध :—विधिटिन कम्पनी में नियत दिन में टीक पूर्व नियोजित प्रन्येक पूर्णकालिक अधिकारी या अन्य कर्मचारी (जिसके प्रान्तर्गत विधिटिन कम्पनी के निदेशक नहीं हैं) नियत दिन में पारिणामिक कम्पनी का, यथा-

स्थिति, अधिकारी या अन्य कर्मचारी हो जाएगा और उसी अवधि तक और उन्हीं विवरणों और शर्तों पर तथा उन्हीं अधिकारों और विशेषाधिकारों में सहित उसमें अपना पद धारण करेगा और सेवा करेगा जो कि उसे, यदि यह आवेदन त किया गया होता, विधिटिन कम्पनी के अधीन अनुच्छेद होते, और उनका ऐसा होना तब तक आरी रहेगा जब उक्त कि पारिणामिक कम्पनी में उसका नियोजन सम्यक रूप से समाप्त नहीं करविया जाता है। या जब तक कि उसके पारिणामिक या सेवा की शर्तों पारस्परिक सहभवति से सम्यक रूप से परिवर्तित नहीं की जाती है।

९. नियोजकों की स्थिति :—विधिटिन कम्पनी का प्रन्येक नियोजक, जो नियत दिन के टीक पूर्व ऐसा पद धारण कर रहा था, नियत दिन को विधिटिन कम्पनी का नियोजक नहीं रहेगा।

१०. स्टेट केमिकल्स एंड फार्मास्युटिकल्स कार्पोरेशन आफ ईडिया लिमिटेड का विधिटन :—इस आदेश के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए, नियत दिन से स्टेट केमिकल्स एंड फार्मास्युटिकल्स कार्पोरेशन आफ ईडिया लिमिटेड विधिटिन हो जाएगी और कोई या व्यक्ति विधिटिन कम्पनी के विश्व या उसके नियोजक या अधिकारी के विश्व, ऐसे नियोजक या अधिकारी की हैसियत से, वहां तक के मिवाएँ जहां उक्त कि इस आदेश के उपबन्धों को प्रवर्तित करने के लिए आवश्यक हैं, कोई दावा, मान या कार्यालयी नहीं करेगा।

११. कम्पनी रजिस्ट्रार द्वारा आदेश का रजिस्ट्रीकरण :—कम्पनी विधि द्वारा, राजपत्र में इस आदेश के अधिसूचित होने के पश्चात् यथासीध कम्पनी रजिस्ट्रार, दिल्ली और हरियाणा को इस आदेश की एक-एक प्रति भेजेगा, जिसकी प्राप्ति पर कम्पनी रजिस्ट्रार दिल्ली और हरियाणा पारिणामिक कम्पनी द्वारा विहित फीस के संदाय किए जाने पर आदेश को रजिस्ट्रीकृत करेगा और इस आदेश की प्रति की प्राप्ति की तारीख में एक मास के भीतर उसके रजिस्ट्रीकरण को अपने डस्टावेज में प्रमाणित करेगा।

तन्त्रशास्त्र कम्पनी रजिस्ट्रार कार्टिक, अगलीर अन्तर्क कम्पनी में मंबंधित उसके पास रजिस्ट्रीकृत, जमा किए गए या दाखिल किए गए मधी दस्टावेज, कम्पनी रजिस्ट्रार, दिल्ली और हरियाणा, नहीं दिल्ली को तुरन्त प्रेषित करेगा, जो ऐसे दस्टावेजों की प्राप्ति पर उन्हें मैमर्स स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन आफ ईडिया लिमिटेड की, जिसके साथ अन्तर्क कम्पनी को मामामेलित किया गया है, काले पर रखेगा और उन्हें ५मेवार्ष कार्पोरेशन दस्टावेजों को अपनी काइल पर रखेगा।

१२. पारिणामिक कम्पनी का जापन और संगम अनुच्छेद —स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन आफ ईडिया लिमिटेड का जापन और संगम-अनुच्छेद, उसे वे नियत दिन के टीक पूर्व ये, उसी दिन में, पारिणामिक कम्पनी के जापन और संगम अनुच्छेद हो जाएगे।

कम्पनी विधि बोर्ड के आदेश से,

[सं० २४/४३/८१-सी एल III]

एस० सी० भित्ति, सदस्य कंपनी विधि बोर्ड

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

(Company Law Board)

ORDER

New Delhi, the 31st March, 1982

S.O. 226(E).—Whereas the Company Law Board is satisfied that for the purpose of securing the principal objects of the State Chemicals and Pharmaceuticals Corporation of India Limited, a Company incorporated under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) and for the purpose of securing the use of scarce resources of equipment, personnel and material for ensuring coordination in policy and efficient and economic expansion and working of the State Trading Corporation

and allied units, it is essential in the public interest that the State Trading Corporation of India Limited, a Company incorporated under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) and the said State Chemicals and Pharmaceuticals Corporation of India Limited, a wholly owned subsidiary of the State Trading Corporation of India Limited should be amalgamated into a single Company.

And whereas a copy of the proposed Order has been sent in draft to the companies aforesaid, namely, State Chemicals and Pharmaceuticals Corporation of India Limited and the State Trading Corporation of India Limited and the suggestions and objections received from them have been duly considered by the Company Law Board.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-sections (1) and (2) of Section 396 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), read with the notification of the Government of India in the Department of Company Affairs No. G.S.R. 443(E), dated the 18th October, 1972, the Company Law Board hereby makes the following Orders namely :—

1. **Short title.**—This Order may be called the State Chemicals and Pharmaceuticals Corporation of India Limited and the State Trading Corporation of India Limited (Amalgamation) Order, 1982.

2. **Definitions.**—In this Order, unless the context otherwise requires—

- (a) "appointed day" means the date on which this Order is notified in the Official Gazette;
- (b) "dissolved Company" means the State Chemicals and Pharmaceuticals Corporation of India Limited.
- (c) "resulting Company" means the State Trading Corporation of India Limited.

3. **Amalgamation of the Companies :**

(1) On and from the appointed day, the undertaking of the dissolved Company, subject to encumbrance, if any, shall stand transferred to, and vest in, the State Trading Corporation of India Limited, which Company shall, immediately on such transfer, be deemed to be the Company resulting from the amalgamation.

(2) For accounting purposes, the amalgamation shall be effected with reference to the audited accounts and balance sheets as on the 31st March, 1981, of the two Companies and the transactions thereafter shall be pooled into a common account. The dissolved Company shall not be required to prepare its final accounts as on any later date and the resulting Company shall take over all assets and liabilities according to the balance sheet as on the 31st March, 1981 and accept full responsibility for all transactions thereafter.

Explanation : The "undertaking of the dissolved company" shall include all rights, powers, authorities and privileges and all property, movable or immovable, including cash balances reserves, revenue balances, investments and all other interests and rights in or arising out of such property as may belong to or be in the possession of the dissolved Company immediately before the appointed day, all books, accounts and documents relating thereto and also all debts, liabilities, duties and obligations of whatever kind then existing of the dissolved Company.

4. **Transfer of certain items of property.**—For the purpose of this Order, all the profits or losses, or both, if any, of the dissolved Company as on the appointed day, and the revenue reserves or deficits or both, if any of the dissolved Company when transferred to the resulting Company shall respectively form part of the profits or losses, and the revenue reserves or deficits, as the case may be, of the resulting Company.

5. **Saving of Contracts etc.**—Subject to the other provisions contained in this Order, all contracts, deeds, bonds, agreements and other instruments of whatever nature to which the dissolved Company is a party, subsisting or having effect

immediately before the appointed day, shall have full force and effect against or in favour of the resulting company and may be enforced as fully and the resulting Company had been a party thereto.

6. **Saving of Legal Proceedings.**—If, on the appointed day any suit, prosecution, appeal or other legal proceeding of whatever nature by or against the dissolved Company be pending the same shall not abate or be discontinued, or be in any way prejudicially affected by reason of the transfer to the resulting Company of the undertaking of the dissolved Company or of anything contained in this Order, but the suit, prosecution, appeal or other legal proceeding may be continued, prosecuted and enforced by or against the resulting Company in the same manner and to the same extent as it would or may be continued, prosecuted and enforced by or against the dissolved Company if this Order had not been made.

7. **Provisions with Respect to Taxation.**—All taxes in respect of the profits and gains (including accumulated losses and unabsorbed depreciation) of the business carried on by the dissolved Company before the appointed day shall be payable by the resulting Company to the same extent as they would have been payable by the dissolved Company if this Order had not been made.

8. **Provisions respecting existing officers and other Employees of the dissolved Company.**—Every wholotime officer or employee (excluding the directors of the dissolved Company) employed immediately before the appointed day in the dissolved Company, shall, as from the appointed day, become an officer or employee as the case may be, of the resulting Company and shall hold his office or service therein by the same tenure and upon the same terms and conditions with the same rights and privileges as he would have held the same under the dissolved Company, if this Order had not been made, and shall continue to do so unless and until his employment in the resulting Company is duly terminated or until his remuneration and conditions of employment are duly altered by mutual consent.

9. **Position of Directors.**—Every director of the dissolved Company holding office as such immediately before the appointed day shall cease to be a director of the dissolved Company on the appointed day.

10. **Dissolution of the State Chemicals and Pharmaceuticals Corporation of India Limited.**—Subject to the other provisions of this Order, as from the appointed day, the State Chemicals and Pharmaceuticals Corporation of India Limited shall be dissolved and no person shall make, assert or take any claims, demands or proceedings against the dissolved Company or against a director or an officer thereof in his capacity as such director or officer, except in so far as may be necessary for enforcing the provisions of this Order.

11. **Registration of the Order by the Registrar of Companies.**—The Company Law Board shall, as soon as may be after this Order is notified in the Official Gazette, send to the Registrar of Companies, Delhi and Haryana, a copy of this Order, on receipt of which the Registrar of Companies, Delhi and Haryana shall register the Order on payment of the prescribed fees by the resulting Company and certify under his hand the registration thereof within one month from the date of receipt of a copy of this Order.

The Registrar of Companies, Delhi and Haryana, New Delhi shall place all documents registered, recorded or filed with him relating to the transferor Company on the file of M/s. State Trading Corporation of India Limited with whom the transferor Company has been amalgamated and consolidate these and shall keep such consolidated documents on his file.

12. **Memorandum and Articles of Association of the Resulting Company.**—The Memorandum and Articles of Association of the State Trading Corporation of India Limited as they stood immediately before the appointed day shall, as from the appointed day, be the Memorandum and Articles of Association of the resulting Company.

By Order of the Company Law Board

[No. 24/43/81-CL. III]

S. C. MITAL

Member, Company Law Board

